BANE 147: नगरीय मानवविज्ञान

अनुशिक्षक चिंहित सत्रीय–कार्य

(TMA)

कोर्स कोड: बीएएनई 147

असाइनमेंट कोड: BANE 147/ASST/TMA/ जुलाई 2026 और जनवरी 2027

कुल अंक: 100

सत्रीय कार्य में तीन अनुभाग हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए। **20X2=40**

क. नगरीकरण एवं नगरीयता को नगरीय जीवन को आकार देने वाली प्रक्रियाओं के रूप में स्पष्ट कीजिए।

ख. नगरीय क्षेत्रों में परिवार, विवाह एवं नातेदारी के बदलते प्रतिरूपों की व्याख्या कीजिए।

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित में से प्रत्येक का उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। (लघु टिप्पणियाँ लिखें) **10X2=20**

क. मैनचेस्टर विचारधारा

ख. ग्रामीण से नगरीय प्रवासन तथा नगरीय जीवन में अनुकूलन

निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 75 शब्दों में दीजिए। **2X5=10**

क. प्राथमिक एवं द्वितीयक नगरीकरण

ख. अर्द्ध–नगरीय एवं परिनगरीय क्षेत्र

ग. नगरीय पारिस्थितिकी

घ. विश्वनागरिक पहचान

ङ. मोहल्ला

सत्रीय कार्य – III

क. किसी भी नगरीय पड़ोस में विविधता के अध्ययन हेतु एक संक्षिप्त अनुसंधान अभिकल्प तैयार कीजिए। 20

ख. अपने नगर में ग्रामीण–से–नगरीय प्रवासियों के अध्ययन हेतु एक साक्षात्कार निर्देशिका तैयार कीजिए। 5

ग. किसी नगरीय क्षेत्र में सार्वजनिक स्थानों के उपयोग के अध्ययन हेतु एक प्रेक्षण जाँच–सूची तैयार कीजिए। 5

क. नगरीकरण एवं नगरीयता को नगरीय जीवन को आकार देने वाली प्रक्रियाओं के रूप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

नगरीय जीवन को समझने के लिए 'नगरीकरण' और 'नगरीयता' दो परस्पर संबंधित, किंतु भिन्न अवधारणाएँ हैं। नगरीकरण उस जनसांख्यिकीय, आर्थिक और स्थानिक परिवर्तन की प्रक्रिया को व्यक्त करता है जिसके फलस्वरूप नगरों का विस्तार होता है तथा आबादी और कार्यकलाप नगरों में केंद्रित होने लगते हैं। इसके विपरीत नगरीयता नगर में रहने और सामाजिक संबंध बनाने की विशिष्ट जीवन-पद्धति है। मानवविज्ञान दोनों को एक साथ देखता है, क्योंकि इमारतों, सड़कों और रोजगार के बढ़ने से अपने-आप समान अनुभव नहीं बनता; लोग अपनी वर्गीय स्थिति, जाति, लिंग, आयु और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार नगर का अलग-अलग अनुभव करते हैं।

नगरीकरण का अर्थ और उसके प्रमुख आयाम

नगरीकरण केवल ग्रामीण जनसंख्या का नगरों में आ जाना नहीं है। इसमें जनसंख्या का संकेंद्रण, मौजूदा नगरों की सीमाओं का विस्तार, छोटे कस्बों का नगरों में रूपांतरण और गैर-कृषि व्यवसायों में वृद्धि शामिल हैं। औद्योगीकरण, व्यापार, प्रशासन, उच्च शिक्षा, परिवहन तथा सूचना प्रौद्योगिकी इस परिवर्तन को गति देते हैं। इसके साथ भूमि का उपयोग बदलता है, आवासीय कॉलोनियाँ और औद्योगिक क्षेत्रों का विकास होता है तथा जल, बिजली, स्वास्थ्य, कचरा प्रबंधन और परिवहन की माँग बढ़ती है। इसलिए यह प्रक्रिया सामाजिक संस्थाओं और पर्यावरण दोनों पर गहरा प्रभाव डालती है।

भारत में नगरीकरण का स्वरूप विविध है। महानगरों में सेवा क्षेत्र और वैश्विक पूँजी का प्रभाव अधिक दिख सकता है, जबकि मध्यम नगरों में मंडी, शिक्षा, तीर्थ, पर्यटन या प्रशासनिक कार्य महत्त्वपूर्ण होते हैं। कुछ लोग स्थायी प्रवास करते हैं, तो कई ग्रामीण परिवार रोजाना आवागमन द्वारा नगरीय अर्थव्यवस्था से जुड़े रहते हैं। इस प्रकार नगरीकरण को एक सीधी रेखा में चलने वाली